विट्ठल राम साहू "निश्छल"

([illegible] साहित्य समिति, महासमुन्द)

संपर्क सूत्र : [illegible], वार्ड नं. 13, महासमुन्द (493 445)

जिला - महासमुन्द (छत्तीसगढ़)

मो० 99775-43153

क्रमांक .... दिनांक 20-2-17

आदरणीय,

प्रिय [illegible] प्रकाशन परिवार
गुरुदेव श्री [illegible] जी एवं
श्री नीरज आनंद झा जी

सादर प्रणाम। मैं एक मंद बुद्धि पाठक हूँ इस पवित्र ग्रंथ पर कुछ कहने व लिखने में असमर्थ हूँ। केवल [illegible] अनुभूति कर सकता हूँ। "काशी मरणान्मुक्ति" तो अपने नाम में एक अलौकिक कृति है। अध्यात्म के सिद्धान्तों, [illegible] के [illegible] से सुसज्जित देववाणी है। यह एक उपन्यास न होकर एक [illegible] के रूप में मेरे हृदय में समाहित होकर एक सद्गुरु के समान [illegible] में [illegible] जीवन को [illegible] की प्रेरणा दे रहा है।

लेखक द्वय परम आदरणीय गुरुदेव [illegible] एवं [illegible] नीरज आनंद जी कोटि कोटि धन्यवाद के पात्र हैं। जिन्होंने [illegible] इस कृति की रचना की [illegible] उपन्यास [illegible] एक नई ऊर्जा का संचार करती है। एक बार मैं तो [illegible] नहीं [illegible] एक [illegible] की तरह [illegible]। इसे उपन्यास की तरह पढ़ना नहीं वरन् एक सद्ग्रंथ की तरह पढ़ने में परम आनंद की अनुभूति होती है।

इस कलीकाल में तो हम एक नायक ([illegible]) की तरह ही [illegible] हैं, [illegible] मुक्ति के मार्ग में [illegible] करने का, [illegible] मुक्ति के मार्ग का साक्षात्कार कराता है। "काशी मरणान्मुक्ति" पाठक के मानस पटल पर चमत्कारिक प्रभाव डालता है। इसका प्रत्येक [illegible] मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालती है। [illegible] के समान [illegible] के सामने [illegible] चलती रहता है। मन को [illegible] तक [illegible] जाता है। [illegible] तक [illegible] बनाये रखता है। मैंने इस उपन्यास को अपने आत्मीय मित्रों को पढ़ने के लिए दिया है ताकि वे भी इससे लाभ उठा सकें।

धन्यवाद

आपका पाठक
[signature]
विट्ठल राम साहू
से० नि० [illegible] महासमुन्द, छ०ग०